खड २१ संख्या २२
मई २७ जून २, १९८४
टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन
इंद्रजाल कॉमिक्स
शैतान मंडली
G.N. BRAHMANIA.
Scanned, Edited & Enhanced By
Rajesh Kumar Patna©

खंड २१ संख्या २२
मई २७ जून २, १९८४
टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन
इंद्रजाल कॉमिक्स
शैतान मंडली
रु. २:००
G.N. BRAHMANIA.

DAD, WHERE ARE YOU TAKING US DURING THIS VACATION?
SAJAN, WHERE WOULD YOU LIKE TO GO?
KASHMIR, OOTY?....
THIS TIME HOW ABOUT KERALA WITH ITS BEAUTIFUL PLACES?
ARE THERE MANY THINGS TO SEE AND DO THERE, DAD?
OF COURSE. TRIVANDRUM, THE STATE CAPITAL, IS FAMOUS FOR ITS MAIN TEMPLE, MUSEUM AND ZOO. NEYYAR DAM AND PONMUDI HILL RESORT AREN'T FAR AWAY EITHER. WE CAN ALSO GO TO THEKKADY.
WHAT'S SO SPECIAL ABOUT THEKKADY?
THAT'S WHERE THE PERIYAR WILDLIFE SANCTUARY IS. WE CAN HAVE A BOAT RIDE AND WATCH WILD ANIMALS ESPECIALLY ELEPHANTS, BASKING IN THE SUN AND SWIMMING.
REALLY? THAT'LL BE FANTASTIC!
A BOAT CRUISE FROM COCHIN TO KUMARAKOM THROUGH THE BACKWATERS WILL BE A PLEASANT CHANGE TOO
DEAR, I THINK YOU FORGOT TO MENTION KOVALAM
I'AM SORRY DARLING. KOVALAM NEAR TRIVANDRUM IS ONE OF THE FINEST BEACHES IN THE WORLD.
OUR SCHOOLS ARE CLOSED NOW. CAN WE GO NEXT WEEK, DAD?
HEY, WAIT TILL DADDY'S HOLIDAYS START.
I'LL WRITE TO THE TOURIST OFFICE, PARK VIEW, TRIVANDRUM TODAY ITSELF FOR DETAILS. AND WE CAN THEN PLAN A TRIP DURING THIS VACATION TO KERALA

शैतान मंडली
कथा : जगजीत उप्पल
चित्रांकन : गोविंद ब्रह्माणिया

एक दोपहर को तेज़ गर्मी में एक जीप राजमार्ग से देवगढ़ कोयला खान की तरफ़ जा रही थी. ड्राइवर था इलाके का कुख्यात बदमाश बसंता. बाकी चार उसके चमचे थे.
बहुत गर्मी है!
खान पर शायद कुछ ठण्डा पीने को मिल जाये.

जल्दी ही वे खदान तक पहुंच गये. बसंता ने मैनेजर गुप्ता के दफ़्तर के सामने जीप रोकी.
यहीं रुको, मैं कुछ ठण्डे का इंतज़ाम करता हूं.
शुक्रिया बसंता!

बसंता दफ़्तर में घुसा.
मैं 'ब्रदर्स कम्बाइन' से आया हूं— बसंता. मुझे मैनेजर से मिलना है.
बैठिए!

कुछ देर बाद बसंता मैनेजर के कैबिन में पहुंचा.
आइए... बैठिए!
शुक्रिया. बातचीत शुरू करें उससे पहले कुछ ठण्डा पीने को मिलेगा? बाहर जीप में मेरे चार साथी बैठे हैं, उन्हें भी भिजवा दें!

अजनबी के उद्दण्ड व्यवहार से मैनेजर चौंक गया, फिर भी उसने ठण्डा मंगवाया.
कहिए, मैं क्या कर सकता हूं आपके लिए?
मैं 'ब्रदर्स कम्बाइन' से आया हूं. हम कई काम करते हैं, जिनमें परिवहन का काम भी है. हम चाहते हैं कोयले की खदान का काम आप हमें दें!

मैनेजर ने 'ब्रदर्स कम्बाइन' का कार्ड देखा— उस पर दो तलवारों का निशान बना था.
हमारा काम सिंह ट्रांसपोर्ट वाले कर रहे हैं और वाजबी दाम पर अच्छा काम कर रहे हैं वे.
हः! खत्म होगया उनका ठेका. सिंह ट्रांसपोर्ट वाले अपना धंधा बंद कर रहे हैं!

क्यों? हमें तो नहीं बताया उन्होंने!
कल अखबार में पढ़ लीजिएगा. हां, मैं कल सवेरे दस बजे ठेके के कागज़ात पर दस्तखत कराने आऊंगा. अलविदा!

बसंता बाहर चला गया.
'ब्रदर्स कम्बाइन'...
इसके बारे में कहीं पढ़ा है.
तस्करी-वस्करी का कोई
चक्कर था इसका तो!

उसी दोपहर सिंह ट्रांसपोर्ट का एक ट्रक देवगढ़ कोयला खान से बाहर निकला.

जब वह पहाड़ी इलाके में पहुंचा...

इंजिन शुरू करो!

'ब्रदर्स कम्बाइन' का एक बड़ा ट्रेलर-ट्रक सामने से आते ट्रक की तरफ़ चला.

सिंह ट्रांसपोर्ट का ड्राइवर हक्का-बक्का था...
यह चाहता क्या है?!

...पर टक्कर बचाने का वक्त ही नहीं था उसके पास.
धड़ाम!

दूसरे दिन देवगढ़ कोयला खान के मैनेजर ने 'दुर्घटना' की खबर पढ़ी.
यह दुर्घटना नहीं है. मैं पुलिस को सूचित करूंगा!

उसके टेलिफोन करने से पहले ही एक नौकर अंदर आया–
साहब, बसंता नाम का एक आदमी आपसे मिलने आया है.
बसंता...! अंदर भेज दो!

बसंता का प्रवेश–
नमस्ते मैनेजर साहब, खबर पढ़ी ?
तुम यहां क्यों आये हो ? तुम हत्यारे हो ! मैं पुलिस को बुलाता हूं!

बसंता बैठ गया और चाय का कप उठा लिया!
शांत! मैं तुम्हारे बच्चे को स्कूल पहुंचाने आया हूं. अभी ले गये हैं उसे मेरे आदमी. क्या तुम चाहते हो कि वे उसे श्मशान ले जायें ?
तुम....!!

मैं दफ्तर में आकर इकरारनामे पर दस्तखत कराजाऊंगा. सौदा तय होने पर तुम्हारा बेटा तुम्हें मिल जायेगा!

बसंता के जाते ही गुप्ताजी ने बच्चे के स्कूल में प्रिंसिपल साहब को फोन किया.
क्या मेरा बेटा स्कूल नहीं आया ?!

बाद में मैनेजर ने अपने दफ्तर में ब्रदर्स कम्बाइन के नाम ठेके पर हस्ताक्षर कर दिये. बसंता बहुत खुश था.
शुक्रिया गुप्ताजी. अब घर पर फोन करके बेटे से बात कर लें. वह ठीक-ठाक है. फिर कभी आऊंगा उससे मिलने.
मेरे घर आने की जरूरत नहीं!!

देवगढ़ कोयला खदान में दफ्तर के कर्मचारियों के अलावा तीन हजार मज़दूर काम करते थे, सब आस-पास के गांवों के. आज वेतन का दिन था.
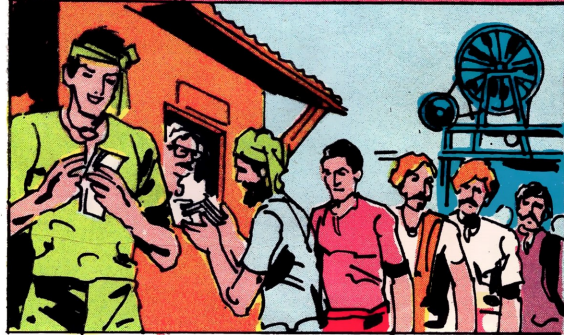
नीलगांव के ४० मज़दूर अपना वेतन लेकर अपने गांव की ओर चले.
काका, आज तो जश्न मनेगा?
कैसा जश्न रघु! एक-एक पैसा जोड़ रहा हूं बेटी के ब्याह के लिए!

जब वे जंगल के संकरे रास्ते से गुजर रहे थे तो एक जीप दिखी. उसमें पांच आदमी थे.
यह कौन है?
कुछ गड़बड़ लगती है!

बसंता के पीछे-पीछे सब जीप से बाहर आये. उसने ग्रामीणों से कहा-
देखो, अपनी तनख्वाह का दसवां हिस्सा हमें दे दो. शांति से रहना है तो पैसा बांटना ही होगा!
किसलिए? मेहनत से कमाया है. हम तुम्हें एक पैसा भी नहीं देंगे!
तो हम सारा पैसा लेंगे. सोचलो!

भोले-भाले ग्रामीणों ने देखा, गुण्डे चाकू, साइकिल की चेन और बंदूकें लिये हुए थे.

देखो, हम मज़दूरों की यूनियन बना रहे हैं तनखाह का दसवां हिस्सा देकर तुम हमारे सदस्य बन जाओगे, हम तुम्हारी नौकरी सुरक्षित रखेंगे...
तुम्हारी जान की भी हिफ़ाजत करेंगे. तुमलोग यूनियन के मेंबर नहीं बनोगे तो तुम्हारी जान को भी खतरा है!

बेचारे मजदूरों के पास दस प्रतिशत आय देने के अलावा और कोई चारा नहीं था.

पर एक नौजवान मज़दूर रघु ने गुण्डों की धमकी सुनने से इंकार कर दिया.

मैं नहीं दूंगा. मैं पुलिस को खबर करूंगा!

बसंता ने अपने आदमियों को इशारा किया, वे रघु पर झपटे.

बेचारा!

गुण्डों ने रघु को बुरी तरह पीटा–
धम्म!
ढिंग!

इतना काफी है, इसे मारो मत. और इसकी पूरी तनख्वाह ले लो, तभी इसे सबक मिलेगा.

गुण्डे पैसा ऐंठ कर चले गये, काका ने रघु को सहारा देकर खड़ा किया.
बेटे, तुमने पैसा देने से मना क्यों किया? देखो क्या हालत करदी उन्होंने तुम्हारी!

जयगढ़ का मुखिया अपनी पत्नी के साथ नीलगांव से लौट रहा था...
कसम गंगा माई की, यह तो रघु है!

मुखिया कार रोककर उतरा.
रघु! क्या हुआ? यह चोट कैसे लगी तुम्हें?
गुण्डों ने मारा है इसे!

रघु ने बसंता और उसके साथियों द्वारा 'ब्रदर्स कम्बाइन' का सदस्य बनाने के लिए मजदूरों से जबरन पैसा वसूलने की सारी बात बताई.
मैं इन 'बदमाशों' को सबक सिखाऊंगा!

अगले दिन मुखिया 'नासुद' में बहादुर से मिला.
कहो मुखिया!
बहादुर, कभी 'ब्रदर्स कम्बाइन' का नाम सुना है?

बहादुर समझा नहीं...
'ब्रदर्स कम्बाइन'...
भले लोग नहीं हैं. भोले-भाले गांव वालों को लूटते हैं, उन्हें डराते-धमकाते हैं!

मुखिया ने देवगढ़ कोयला खदान की घटना का विवरण बताया.
खदानों में संगठित अपराधों की बात मैंने सुनी थी, पर अबतक कोई अधिकृत शिकायत नहीं आयी.
आती कैसे? कौन मरना चाहता है? देवगढ़ और आस-पास के गांवों के लोग तो ब्रदर्स कम्बाइन का नाम लेने से ही डरते हैं!

इन गैरकानूनी हरकतों को रोकना होगा. चलो वहां चलें.

बहादुर और मुखिया देवगढ़ के लिए रवाना हुए.
कैसे निबटोगे इन बदमाशों से?
उनसे उन्हीं की भाषा में बात करनी पड़ेगी!

बहादुर मैनेजर गुप्ता से मिला
बहादुर, तुम्हारे बारे में इतना सुना है कि लगता है जैसे पहले मिल चुके हैं!
शुक्रिया गुप्ताजी, मैं 'ब्रदर्स कम्बाइन' के बारे में जानना चाहता हूं.

ओह! ट्रांसपोर्ट कम्पनी है वह! क्यों, क्या हुआ?

बहादुर से छिपा नहीं रहा कि गुप्ताजी डरे हुए हैं और बात टालने की कोशिश कर रहे हैं.
मैं उसके मालिक से मिलना चाहता हूं, उसका पता दे दें ताकि मैं संपर्क कर सकूं.

गुप्ताजी ने मेज़ पर पड़े विज़िटिंग कार्ड टटोले-
यह रहा! यह है उनका कार्ड.

बहादुर ने कार्ड देखा. दो तलवारों वाला निशान देखकर उसकी उत्सुकता बढ़ गयी.
हूंss... बसंता और पता नहीं है!
बहादुर, इसी ने कल मज़दूरों से पैसा वसूला था.

गुप्ताजी;
कहां मिल सकता है यह बसंता ?
बाहर उनका ट्रक लद रहा है. शायद ड्राइवर को पता हो.
कसम गंगा माई की, उसे सीधा बसंता के पास पहुंचाना पड़ेगा हमें!

गुप्ताजी बहादुर और मुखिया को वहां लेगये जहां 'ब्रदर्स कम्बाइन' का ट्रक लादा जा रहा था –
अच्छा बहादुर, मुझे जरा काम है, मैं चलूंगा.
ज़रूर. सहयोग के लिए धन्यवाद.

गुण्डा-सा दिखने वाला ड्राइवर अपने दो सहयोगियों के साथ बैठा हुआ था.
तुम इस ट्रक के ड्राइवर हो?
हां! कोई एतराज़?

बहादुर ने उसे कुर्सी से उठा दिया.
खड़े होकर बात करो मुझसे!
अह!
?
!!

बाकी दो ने उठने की कोशिश की लेकिन मुखिया ने उन्हें कुर्सी में धकेल दिया.
बैठो रहो. ड्राइवर से बात हो रही है. घबराओ मत, तुम्हें भी मौका मिलेगा.

ड्राइवर बुरी तरह डर गया था.
तु... तुम... क्या... चाहते हो ?
मुझे बसंता के पास ले चलो.

जल्दी ही वे ट्रक में बैठकर वहां से रवाना होगये.
तुम जो भी हो, बसंता तुम्हारा भुरता बना देगा!
तबतक तो चुप बैठो रहो!

ट्रक राजमार्ग पर जा रहा था...

...कुछ देर बाद वे सड़क किनारे के एक पेट्रोल-पंप-गैरेज के पास रुके.
अब तुम्हारा खेल खत्म, अजनबी!
बसंता को बुलाओ!

ड्राइवर और उसके दोनों साथी गैरेज की तरफ़ भागे.
यहीं रुकना, मैं उनके पीछे जाता हूं!

भीतर बसंता चार साथियों के साथ खाना खा रहा था. ड्राइवर भीतर पहुंचा.
यहां क्या कर रहे हो? माल पहुंचा दिया?
बसंता, बाहर एक आदमी तुमसे मिलना चाहता है. रोब दिखा रहा है!

तुम तीन एक आदमी को नहीं संभाल सके?
वो...वो अलग ही किस्म का है!

बसंता को गुस्सा आ गया–
आओ देखें, है कौन!
मैं यहां हूं. मेरा नाम है बहादुर!

सबने मुड़कर पीछे खड़े बहादुर को देखा.
यह अंदर कैसे आया ?!
बहादुर... तुम्हीं लड़कों को ट्रेनिंग देते हो न?
मैं अपराधियों को पकड़ता हूं. कभी-कभी तुम जैसे कुटमैयों को भी!

बसंता साथियों सहित बहादुर पर झपटा.

बहादुर ने चीते-सी फुर्ती दिखाते हुए उल्टे हाथ से बसंता पर वार किया.
अह!
जल्दी क्या है, दोस्त!

बसंता दीवार से जा टकराया.
पकड़ लो!
मार दो!

बहादुर ने बिजली की तेजी से मुक्के चलाये...
धम
ढिंग!
अह

...सब धूल चाटने लगे.
अब मेरी बारी!
तुमने भुरता बनाने की बात की थी न!

कुछ ही क्षणों में बसंता और उसके साथी बेकाम होगये.
उठो बसंता, मेरे साथ चलकर नीलगांव के ग्रामीणों के पैसे लौटाओ!
उफ़! मेरा सिर!

बाहर खड़ा मुखिया व्यग्र हो रहा था.
कसम गंगा माई की, अंदर हो क्या रहा है!

जल्दी ही बसंता और उसके साथी एक-एक करके बाहर निकले. सबसे पीछे बहादुर था.
क्या हुआ बहादुर, ये परेड क्यों कर रहे हैं?
बसंता जानना चाहता था, मैं लड़कों को ट्रेनिंग कैसे देता हूं. आज पहला पाठ सीखा है इसने!

बसंता आगे बहादुर के साथ बैठा बाकी सब पीछे बैठे.
नीलगांव चलो.

ट्रेलर नीलगांव की तरफ चला.
'ब्रदर्स कम्बाइन' का मालिक कौन है?
मुझे नहीं पता!

देखो बसंता तुम्हारा खेल खत्म होचुका. तुम अपने मालिकों के हाथ का खिलौना हो. अगर तुमने हमारा साथ दिया, तो कानून तुम्हें रियायत भी दे सकता है.
मैं उसका नाम नहीं बता सकता. वह मुझे मार डालेगा!

नीलगांव जाते हुए वे देवगढ़ कोयला खदान पर रुके. बहादुर मैनेजर से मिला.
गुप्ताजी, मैं चाहता हूं आप हमारे साथ नीलगांव चलें. मेरी जीप यहां है, इसे 'नासुद्र' केंद्र भिजवा देंगे!
ज़रूर!

बहादुर ने फ़ोन पर पुलिस चीफ़ से बात की–
मैंने कुछ बदमाश पकड़े हैं साहब, नीलगांव में पुलिस की गाड़ी भेज दीजिए.
मैं खुद आ रहा हूं.. मैं भी तो देखूं तुम्हारा कमाल!

वे नीलगांव की तरफ़ चले. गुप्ताजी पीछे जीप में थे.
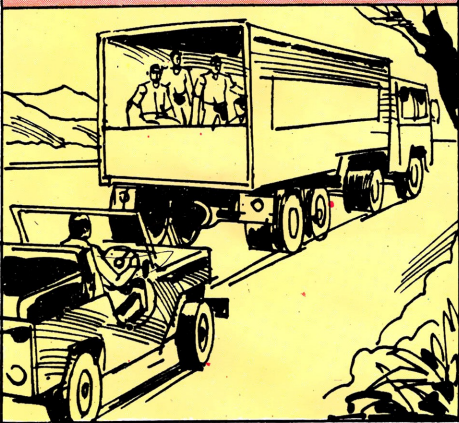
जब वे नीलगांव पहुंचे तो ग्रामीणों ने ट्रेलर को घेर लिया. मुखिया ने रघु को बुलाया.
हम इन बदमाशों को तुम्हारा पैसा लौटाने के लिए लाये हैं.

ग्रामीण कतार बना कर खड़े होगये. बहादुर बसंता के पास खड़ा था.
कैसे हो काका? बेटी कैसी है तुम्हारी?
भगवान तुम्हारा भला करे बेटा. तुम्हारी कृपा से हम ठीक-ठाक हैं!

रघु अपना वेतन वापस लेने आया–

बसंता, तुमने इसकी पिटाई की और इसकी सारी तनख्वाह छीन ली, अब हर्जाने के तौर पर दस गुणा दो इसे.

अह ?

शुक्रिया बहादुर, भगवान तुम्हें लम्बी उम्र दे!

कुछ देर में पुलिस भी पहुंच गयी. पुलिस चीफ़ विशाल ने अपने दोस्त बहादुर से कहा–

बहादुर ने सारी बात विशाल को बतायी. पंचनामा तैयार किया गया और साथियों सहित बसंता को गिरफ्तार कर लिया गया.

गुप्ताजी चीफ़ के पास आये.
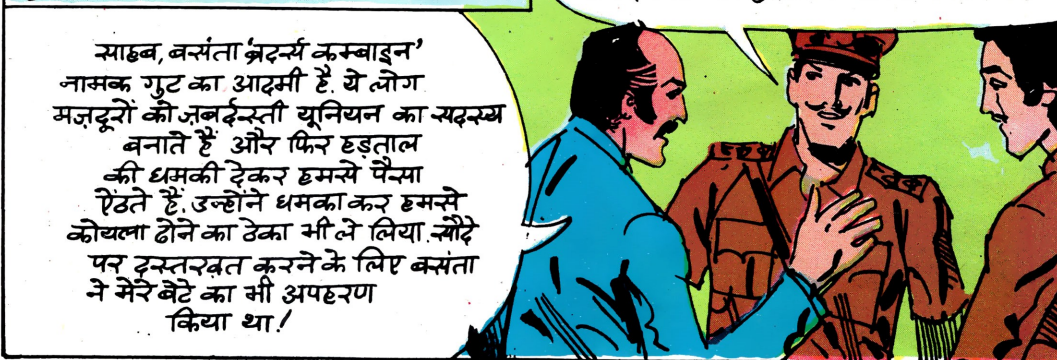
साहब, बसंता 'ब्रदर्स कम्बाइन' नामक गुट का आदमी है. ये लोग मज़दूरों को ज़बर्दस्ती यूनियन का सदस्य बनाते हैं और फिर हड़ताल की धमकी देकर हमसे पैसा ऐंठते हैं. उन्होंने धमका कर हमसे कोयला ढोने का ठेका भी ले लिया. सौदे पर दस्तखत करने के लिए बसंता ने मेरे बेटे का भी अपहरण किया था!

'ब्रदर्स कम्बाइन' का ट्रेलर पुलिस ने ज़ब्त कर लिया और बसंता तथा उसके साथियों को पुलिस स्टेशन ले जाया गया. बहादुर और मुखिया विशाल की जीप में थे.
'ब्रदर्स कम्बाइन' की गतिविधियों का पता लगाने के लिए मैं सब पुलिस थानों पर संदेश भेजूंगा.
कुछ पता चले तो मुझे तत्काल बताइएगा.
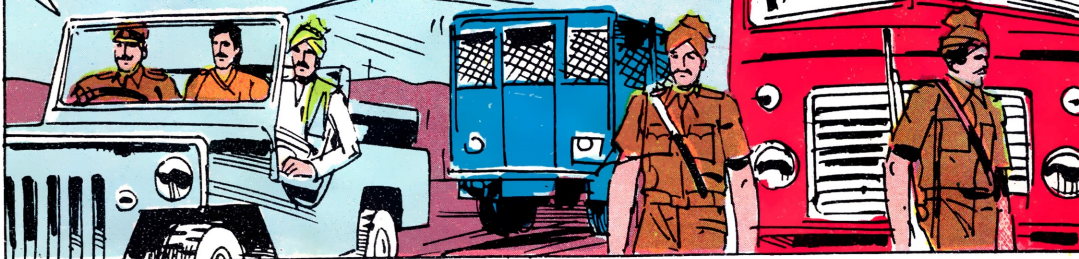
विशाल ने बहादुर को उसके घर छोड़ दिया.
शुक्रिया चीफ़! और मुखिया तुम्हें भी धन्यवाद. तुमने ही बसंता को पकड़वाया!
कसम गंगा माई की, मुझे शर्मिंदा न करो बहादुर!
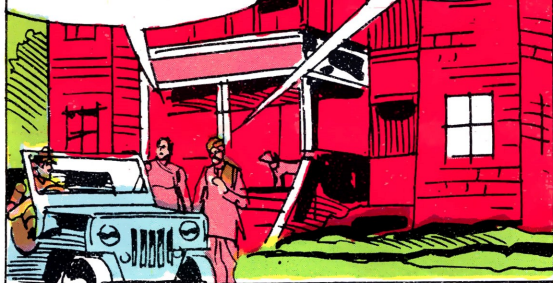
छमिया ने बहादुर का स्वागत किया.
ओह छमिया, भूख लगी होगी तुम्हें!

वे खाना खाने बैठ गये.
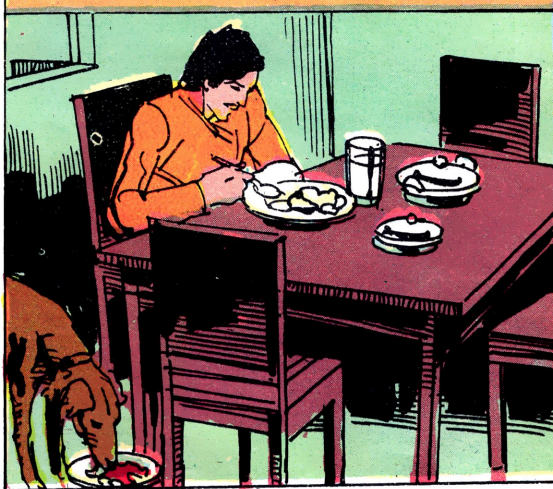
रात को छमिया की धीमी आवाज़ से बहादुर की नींद खुल गयी.
क्या बात है छमिया?
गर्रर्र...
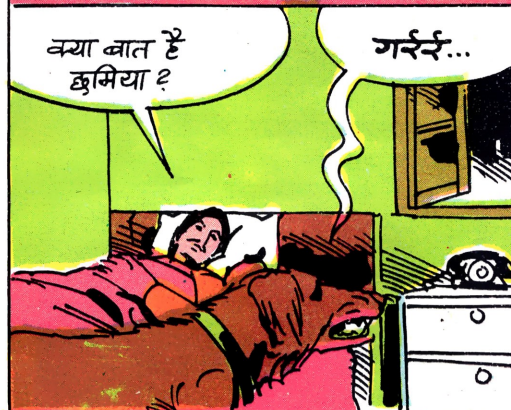
बहादुर जल्दी से उठकर खिड़की के पास पहुंचा.

बाहर के अंधेरे में उसे पेड़ के पास एक छाया दिखी.
हुंऊ...तो यह है!

बहादुर पिछले दरवाज़े से घर के बाहर आया. छमिया उसके पीछे थी.
तुम यहीं रुको छमिया, मैं देखता हूं.
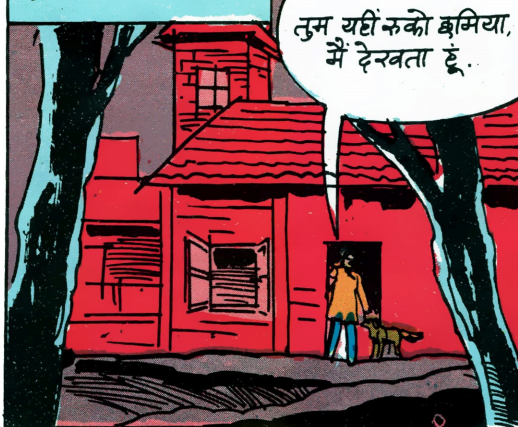
बहादुर घर के बाहर के जंगलों में खो गया.
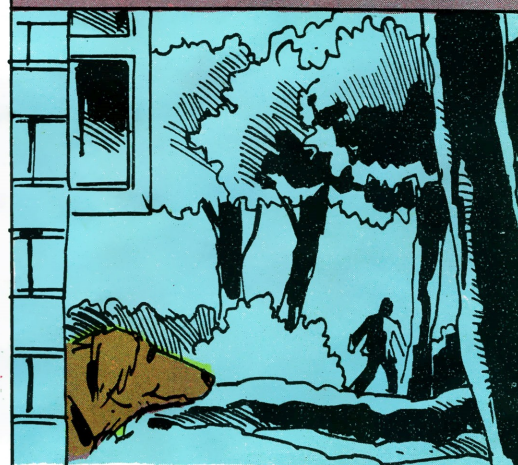
झाड़ियों में चार बदमाश-से आदमी कोई योजना बना रहे थे.
पता नहीं बॉस ने हम चार को क्यों भेजा है जबकि मैं अकेला उसे खत्म कर सकता था!
बहादुर से मुकाबला होगा तो पता चलेगा. उसने बसंता के गिरोह की अकेले छुट्टी कर दी थी!
मैं सामने के दरवाज़े से जाऊंगा. तुम तीनों पिछले दरवाज़े से जाना. और सावधान रहना गोली नहीं, छुरे काम में लाना!

बहादुर पीछे से पहुंचा.
मुकाबले के लिए इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा, दोस्तो!
ऐ!
पकड़ लो! काम आसान बना दिया इसने तो!

हां, क्यों नहीं!
अई sss...!

गुल्प!
तुमने की थी मेरी बराबरी की बात!

बाकी दोनों ने चाकू खोल लिये...
क्लिक!
क्लिक

वे बहादुर के दोनों तरफ़ खड़े होगये.
पलक झपकते ही बहादुर ने एक को उठा लिया...

...और दूसरे पर फेंक दिया.
धम्म!

इससे पहले कि दोनों संभलते, बहादुर ने उनपर पैर रख दिया.
चुपचाप पड़े रहो, वर्ना खैर नहीं होगी!
?
!!

बहादुर ने झुमिया को बुलाने के लिए सीटी बजायी...
ट्वीsss

...झुमिया भागती हुई आ पहुंची.

झुमिया, यहीं रुक-कर इनका ध्यान रखना!
गर्रर...
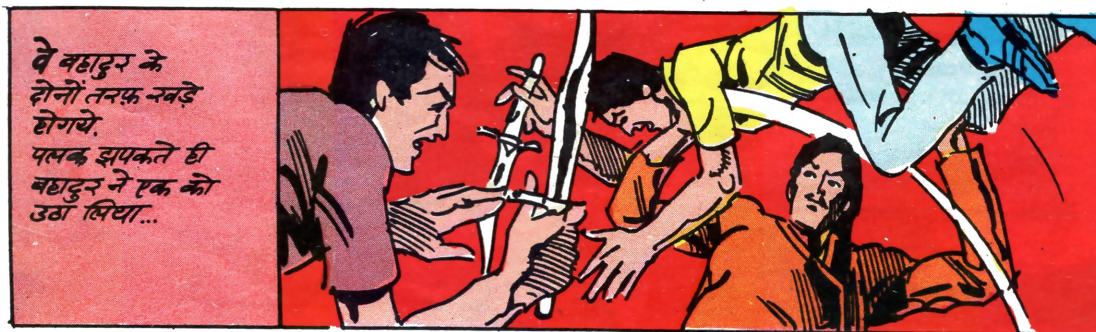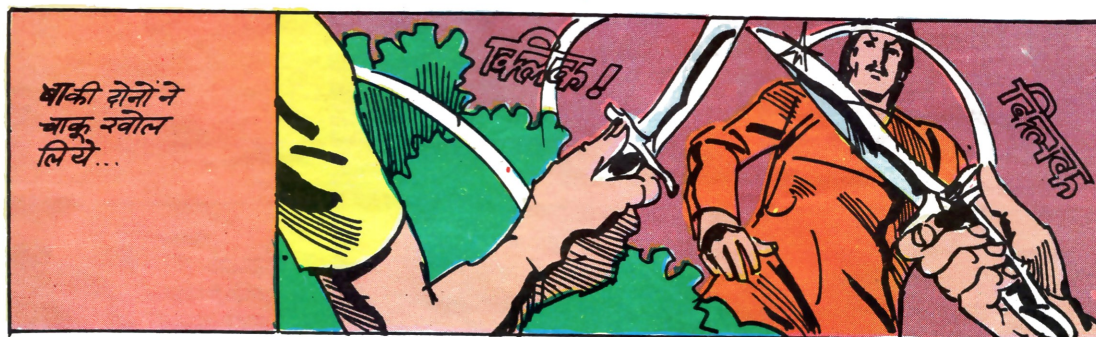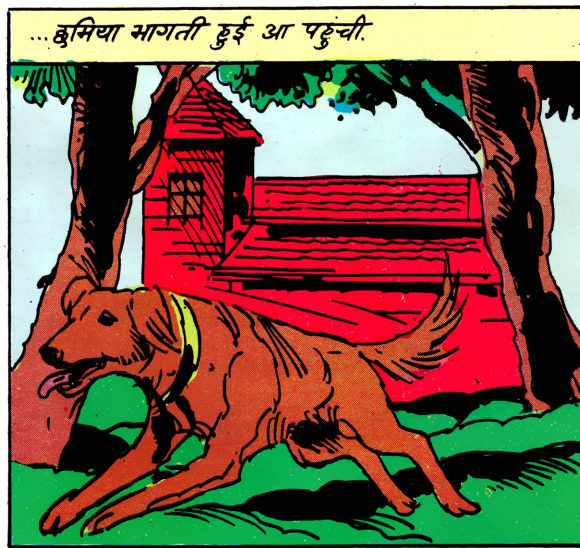
बहादुर रस्सी लाने के लिए घर के भीतर गया.
मूर्ख! किसी को आराम से सोने भी नहीं देते!

बहादुर ने चारों को घर के मुख्य दरवाज़े से बांध दिया.
सबेरे तुम्हारे भाग्य का निपटारा करूंगा. कोई चालाकी मत करना. झमिया काटना जानती है!

झमिया को उनकी पहरेदारी पर छोड़कर बहादुर सोने चला गया.
कुछ सो लेना चाहिए.

सबेरे-सबेरे टेलिफ़ोन की घंटी से बहादुर की नींद खुली.
ट्रिंग, ट्रिंग
ट्रिंग, ट्रिंग!

टेलिफ़ोन पर दूसरी ओर पुलिस चीफ़ विशाल था.
कहो बहादुर! नींद अच्छी आयी होगी! तुम्हारे लिए एक ख़बर है - 'ब्रदर्स कम्बाइन' की.
हूं ऽऽ... उनमें से चार कल रात आये थे मेरे पास- बंधे पड़े हैं!

तुम चाहते क्या हो? इतने लोगों को पकड़ रहे हो, हमारे पास जेल में जगह नहीं है—खैर, मैं अपने आदमी लेकर पहुंच रहा हूं.
ठीक है सा'ब!

बहादुर ने खिड़की के बाहर देखा, झुमिया उन चारों की पहरेदारी कर रही थी.
कमसे कम लोगों को रात में परेशान करने का मज़ा तो उन्हें मिल ही गया.

कुछ देर बाद विशाल पुलिस लेकर आ पहुंचा.
नमस्कार साहब!
नमस्ते बहादुर!

विशाल चार बदमाशों के पास पहुंचा.
किसने भेजा था तुम्हें?
ये गूंगे बने हुए हैं!

थाने में चलकर सब बोलने लगेंगे. ले जाओ इन्हें!
जी, साहब!

विशाल और बहादुर घर में पहुंचे-
मैं जल्दी से चाय बनाता हूं.
यह बढ़िया है. मेरी चाय में चीनी मत डालना.

को रवाना करके बहादुर विशाल के पास आकर बैठ गया.
यह 'ब्रदर्स कम्बाइन' बहुत बड़ा संगठन है. पंजीकृत तो नहीं है, पर कानूनी तौर पर पुख्ता संगठन है और तुम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते.
इस घोटाले का मुखिया कौन है?

काफ़ी बंटा हुआ है इनका काम. कोई एक मालिक नहीं है, पर मुखिया रिपोर्ट के अनुसार बी. एन. के नाम से प्रसिद्ध कोई बैजनाथ सुगयार है इनका.
बी. एन.! कुख्यात तस्कर और अंतरराष्ट्रीय बदमाश!

मैंने गृहमंत्रालय और राजस्व विभाग से संपर्क करके बी. एन. के घर की तलाशी का वारंट जारी करा लिया है.
मैं साथ आ सकता हूं? इस कुख्यात आदमी से मिलना चाहता हूं मैं!

बैजनाथ शहर में अपनी कंपनी के बीस मंजिला मकान में रहता था. खुफ़िया विभाग के अफ़सरों के साथ विशाल और बहादुर ने उस मकान पर छापा मारा.
सब से ऊपर की मंजिल पर रहता है वह.

विशाल और बहादुर ऊपर पहुंचे. कुख्यात तस्कर छत पर बने स्वीमिंग पूल में तैर रहा था.
खूब ठाठ से रहता है!
रह लिया जितना रहना रहना था. अब जेल में चक्की पीसेगा!

बी.एन. ने विशाल और बहादुर को देखा, पर तैरता रहा.
आपलोग बैठिए, मैं अभी आया.

कुछ देर बाद-
कहिए चीफ़, सुना है तलाशी का वारंट लेकर आये हैं आप?
हां, मेरे आदमियों ने काम शुरू भी कर दिया है. बहादुर से मिलो.

बी.एन. ने बहादुर की तरफ़ हाथ बढ़ाया-
कैसे हैं आप? आपके बारे में सुना है मैंने.
और आपके आदमी मेरे पास आते रहे हैं. कल रात भी आये थे.

ऊपर खुफ़िया विभाग के अफ़सर आपत्तिजनक दस्तावेज़ों के लिए घर का कोना-कोना छान रहे थे.

कुछ देर बाद एक अफ़सर ने विशाल को एक काग़ज़ लाकर दिया. बी.एन. को कुछ शक हुआ.

विशाल ने काग़ज़ पढ़ा...
इंटरनेशनल फ्लाइट नं xx में सीट बुक कराओ.
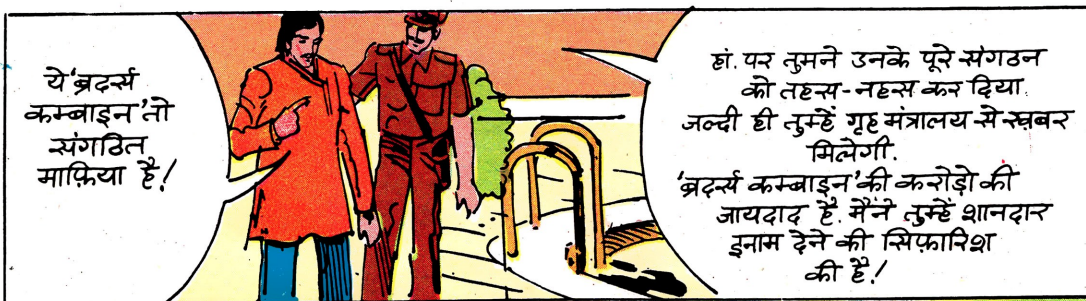
शीश महल में जा फंसे **मैण्ड्रेक** और **लोथार**। कौन था उसका मालिक? क्या वे छूट पाये? पढ़िए अगला अंक.
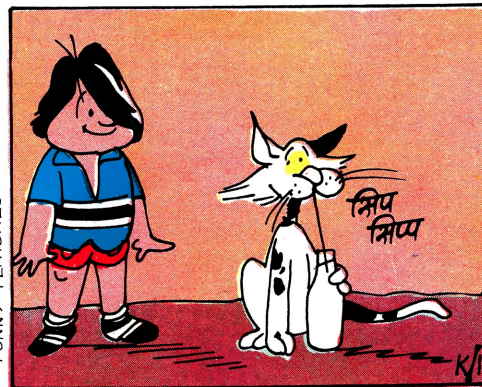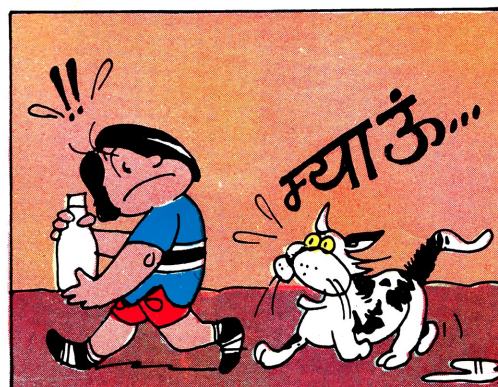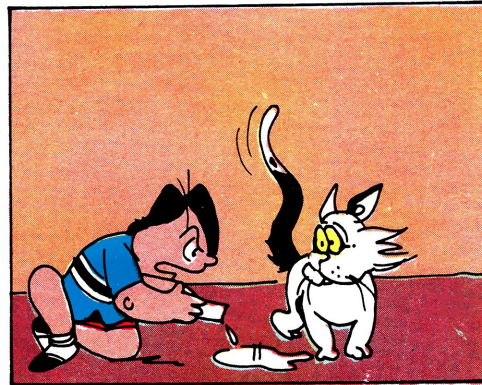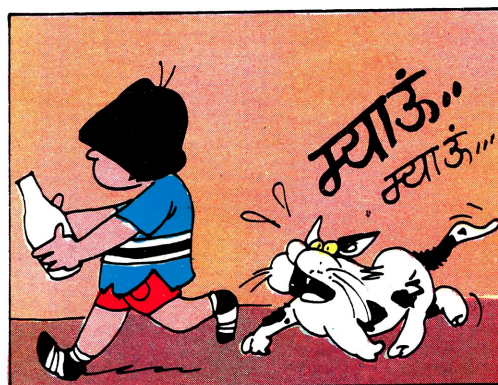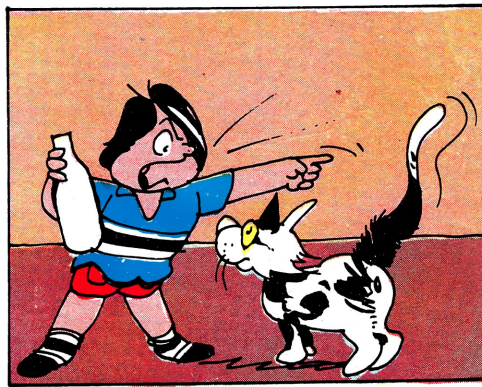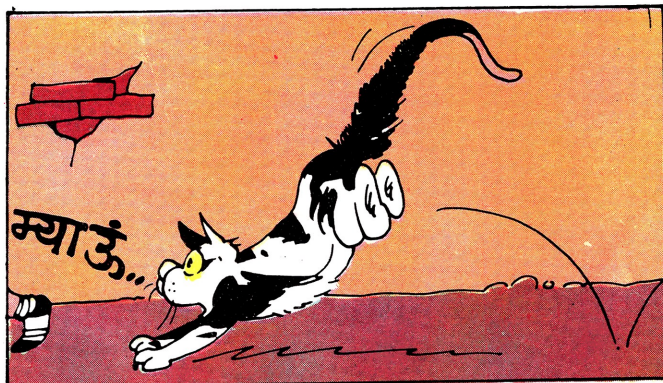
बेनेट कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिये प्रीतीश नंदी द्वारा मैगजीन हाउस, : 1/293 जी.आई डी.सी. मकरपुरा, बड़ौदा-१० (गुजरात) में मुद्रित और प्रकाशित. संपादकः विनोद तिवारी. शाखाएंः ७, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२; १३९, आश्रम रोड, अहमदाबाद-३८० ००९: १०५/७ए, एस. एन. बैनर्जी रोड, कलकत्ता-७०० ०१४; कार्यालयः १३/१, गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट कलकत्ता-७०० ०६९; ६३, माँटिएथ कोर्ट, माँटिएथ रोड, एगमोर, मद्रास-६०० ००८; ४०७-१, तीरथ भवन, क्वार्टरगेट, पुणे-४११ ००२; २६, स्टेशन एप्रोच, सडबरी वेंबली. मिडिलसेक्स, लंदन, यू.के. लंदन टेलीफोन नं. ०१-९०३.९६९६

मिरचू

!
?

FUNNY FEATURES
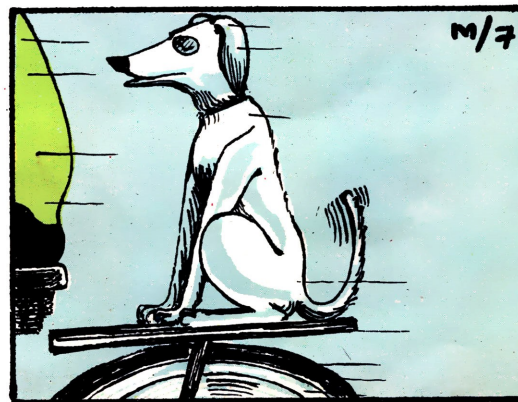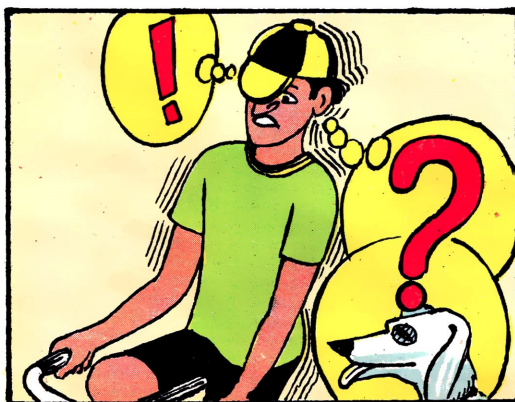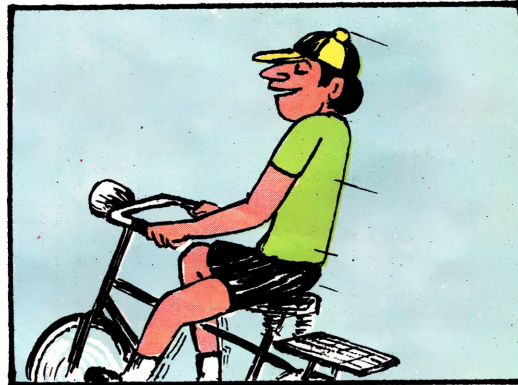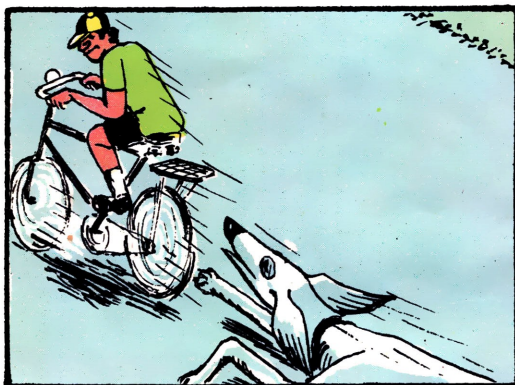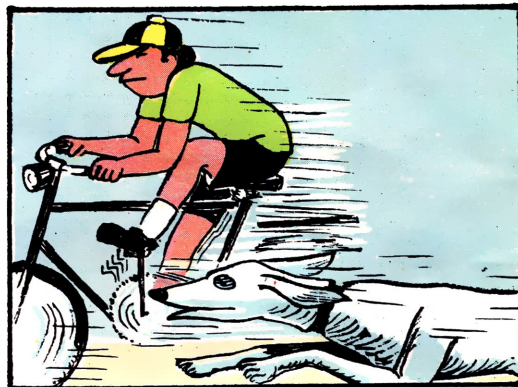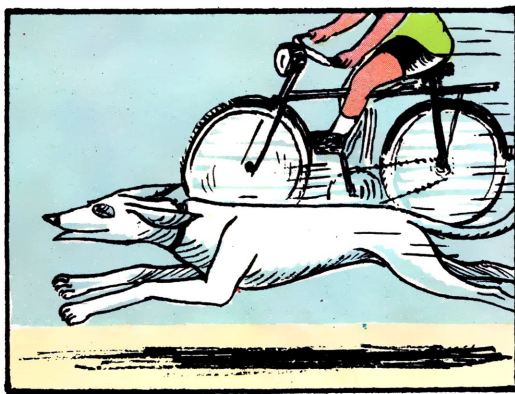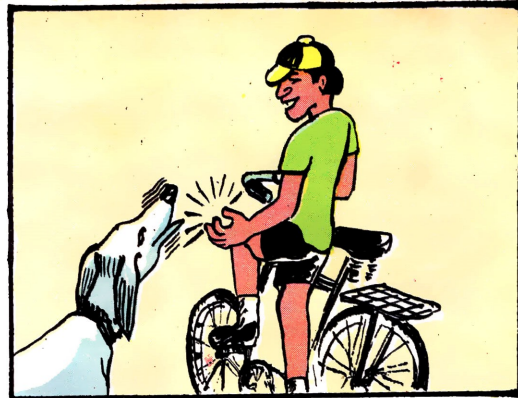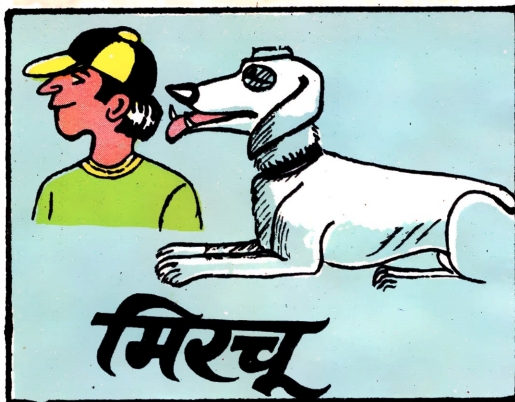
REGD. NO. MH/BY/SOUTH/743
REGD. NO. TN/MS/(C)/531

पूर्व शुल्क के बिना डाक में डालने की अनुमति-लाइसेंस सं. U-118